पंजीयन संख्या : 68939/98 अंक - 5, वर्ष 24

ज्ञान तत्व

समाज शास्त्र | अर्थ शास्त्र | धर्म शास्त्र | राजनीति शास्त्र

443

-: सम्पादक :-

बजरंग लाल अग्रवाल

रामानुजगंज (छ.ग.)

सत्यता एवं निष्पक्षता का निर्भीक पाक्षिक

पोस्ट की तारीख 15.03.2024

प्रकाशन की तारीख 29.02.2024

पाक्षिक मूल्य - 2.50/- (दो रूपये पचास पैसे)

''शराफत छोड़ो, समझदार बनो''

''सुनो सबकी, करो मन की''

''समस्याओं के प्रणेता, कर कानून नेता''
''समाधान का आधार ज्ञान यज्ञ परिवार''

''चाहे कोई अत्याचार, नहीं करेंगे नही सहेंगे''
''हमें सुराज्य नही, स्वराज्य चाहिए''

सहजीवन के प्रशिक्षण बिना हिंसा और स्वार्थ पर अंकुश संभव नहीं :

मार्गदर्शन संस्थान द्वारा कल रात 8:00 बजे इस विषय पर गंभीर चर्चा आयोजित की गई कि वर्तमान समय में समाज में हिंसा और स्वार्थ प्रत्येक व्यक्ति के अंदर क्यों बढ़ रहा है। चर्चा में यह बात सामने आई कि व्यक्ति का जन्म से 5 वर्षों तक जो स्वभाव बनता है उस पर परिवार व्यवस्था का बहुत प्रभाव पड़ता है उसके बाद जब बालक स्कूल जाता है या समाज में जाता है तब उस पर समाज व्यवस्था का प्रभाव पड़ता है लेकिन वर्तमान समय में परिवार व्यवस्था और समाज व्यवस्था को लगभग समाप्त करके राज्य व्यवस्था सब कुछ अपने हाथ में इकट्ठा कर रही है। यह प्रमुख कारण है कि व्यक्ति को बचपन से लेकर बड़े होते तक अनुशासन सीखने को नहीं मिल रहा है। राज्य व्यवस्था ने व्यक्ति को पूरी तरह स्वतंत्र कर दिया। उसे परिवार और समाज की सीमाओं में जुड़ कर रहने की मजबूरी खत्म कर दी। यह एक बड़ी समस्या है। अब समाधान के रूप में परिवार और समाज व्यवस्था को मजबूत करने की जरूरत है। परिवार और समाज के अपने आंतरिक मामलों में राज्य को ना कोई कानून बनना चाहिए ना हस्तक्षेप करना चाहिए। आज तो स्थिति यहां तक आ गई है कि परिवार या समाज किसी गलत करने वाले का बहिष्कार भी नहीं कर सकता है, उसे अनुशासित भी नहीं कर सकता है, उसको समाज से निकाल भी नहीं सकता है, इस तरह राज्य पूरी तरह मालिक हो गया है और समाज व्यवस्था परिवार व्यवस्था को लगातार कमजोर किया जा रहा है। इस विषय पर गंभीरता से सोचने की जरूरत है।

दुनिया की तुलना में भारत के प्रत्येक व्यक्ति में स्वार्थ और हिंसा क्यों बढ़ रही है? इस विषय पर चर्चा का आज हमारा दूसरा दिन है। मैंने इस संबंध में बहुत विचार किया। भारत में प्रत्येक व्यक्ति के अंदर हिंसा बहुत तेजी से बढ़ रही है, इसके दो कारण हैं। पहला कारण है कि 70 वर्षों तक राज्य गांधी विचारों के सहारे न्यूनतम हिंसा के मार्ग पर चलता है। परिणाम स्वरुप प्रत्येक व्यक्ति में असुरक्षा की भावना पैदा हुई और लोग सुरक्षा के लिए अपने–अपने तरीके से संगठित होने लगे। इसका दूसरा कारण यह हुआ कि इस असुरक्षा के भावना का लाभ उठाने के लिए साम्यवाद, इस्लाम और सावरकरवाद ने अपने–अपने तरीके से हिंसा का समर्थन करना शुरू किया। आम लोग अलग–अलग गुटों में बटकर हिंसा का समर्थन भी करने लगे और लाभ भी उठने लगे। धर्म हमेशा अहिंसा का उपदेश देता था और राज्य हमेशा अहिंसा को सुरक्षा देने के उद्देश्य से अधिकतम हिंसा का उपयोग करता था। लेकिन स्वतंत्रता के बाद धर्म हिंसा का प्रचार करने लग गया और राज्य अहिंसा का। नरेंद्र मोदी के आने के बाद वातावरण धीरे–धीरे बदल रहा है। हिंसा के समर्थक मुसलमान, कम्युनिस्ट और सावरकरवादी किनारे किए जा रहे हैं। अभी–अभी भोपाल चुनाव से हिंसा समर्थक प्रज्ञा ठाकुर का टिकट काटकर सत्तारूढ़ दल में अच्छा संदेश दिया है। दूसरी ओर योगी आदित्यनाथ शरीखे मुख्यमंत्री ने उत्तर

प्रदेश को सुरक्षा प्रदेश बनाकर हिंसा समर्थक मुसलमान की कमर तोड़ दी है। साम्यवाद तो अपने आप खत्म हो ही रहा है। मैं समझता हूं कि भारत इस संबंध में ठीक दिशा में जा रहा है। फ्रांस सरकार ने भी इस प्रकार के उग्रवादी विदेशियों को देश से निकालने की पहल करके बहुत अच्छी शुरुआत की है। इसराइल भी अपने तरीके से ठीक दिशा में काम कर रहा है। हमारे लिए यही उचित है कि हम राज्य को समुचित हिंसा और समाज को न्यूनतम हिंसा की दिशा में बढ़ने की प्रेरणा दें।

वैसे तो पूरी दुनिया के प्रत्येक व्यक्ति में स्वार्थ भाव बढ़ रहा है। इस विषय पर भी गंभीरता से सोचा गया। इसका मुख्य कारण यह है कि दुनिया में इस प्रकार का लोकतंत्र विकसित हो रहा है जिसमें व्यक्तिगत संपत्ति और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को सबसे अधिक महत्वपूर्ण माना जा रहा है। यही कारण है कि स्वार्थ और उद्दंडता प्रत्येक व्यक्ति को संस्कार के रूप में प्राप्त हो रही है। लेकिन भारत में इस प्रकार का व्यक्तिगत स्वार्थ अधिक तेजी से बढ़ रहा है क्योंकि भारत में संपत्ति के अतिरिक्त अधिकार भी केंद्रित हो रहे हैं। व्यक्ति के पास जब संपत्ति, सम्मान और अधिकार तीनों इकट्ठे हो जाएंगे तो व्यक्ति में स्वार्थ बढ़ने का खतरा अधिक होना स्वाभाविक है। वर्तमान सरकार भी इस संबंध में कुछ सोच नहीं पा रही है कि क्या किया जा सकता है। मेरे विचार से व्यक्ति के स्वभाव में स्वार्थ की भावना घट इसके लिए व्यक्तिगत संपत्ति और स्वतंत्रता के अधिकार को समाप्त कर देने की जरूरत है। अब संपत्ति व्यक्तिगत नहीं बल्कि सामूहिक होनी चाहिए अर्थात संपत्ति और स्वतंत्रता पूरे परिवार की संयुक्त होनी चाहिए जिस परिवार का व्यक्ति सदस्य है। इस तरह व्यक्तिगत स्वार्थ और उद्दंडता पर नियंत्रण लग सकता है। प्रत्येक व्यक्ति की असीम स्वतंत्रता और सह जीवन का तालमेल ही समाज व्यवस्था है। सरकार को इस प्रकार का कानून बनना चाहिए कि परिवार को एक इकाई मानकर उसे संवैधानिक अधिकार दिए जाएं। परिवार सिर्फ व्यक्तियों का संघ ना होकर एक स्वतंत्र इकाई हो। उस परिवार की सारी संपत्ति संयुक्त हो तथा स्वतंत्रता भी संयुक्त हो। भारत सरकार परिवार व्यवस्था की दिशा में धीरे–धीरे बढ़ तो रही है किंतु संयुक्त संपत्ति और संयुक्त उत्तरदायित्व की दिशा में अभी सोच नहीं पा रही है।

8000 परिवार की संशोधित संरचना के अंतर्गत परिवार की संवैधानिक परिभाषा इस तरह बनाई गई "संयुक्त सम्पत्ति और संयुक्त उत्तरदायित्व के आधार पर एक साथ रहने हेतु सहमत व्यक्तियों का समूह"। नई व्यवस्था में व्यक्ति समाज की एक इकाई न होकर व्यक्ति परिवार की इकाई होगा और परिवार समाज का।

विविध विषयों पर मुनि जी के लेख :

1– सीटों के बंटवारे में फंसी **INDI** गठबंधन : भारतीय जनता पार्टी पूरे देश भर में जोर–जोर से प्रचार में लगी हुई है वही इंडिया गठबंधन अब तक सीटों का बंटवारा भी नहीं कर सका है। आज उत्तर प्रदेश में कांग्रेस पार्टी और सपा के बीच जो सीटों का बंटवारा हुआ उसमें दोनों पक्षों की प्रसन्नता देखकर ऐसा महसूस होता हो जैसे कांग्रेस पार्टी 17 और अखिलेश यादव 62 सीटों पर चुनाव जीत गए हो। जिस राजनीतिक दल में सीटों के बंटवारे पर ही इतनी खुशी दिख रही है वे लोग क्या भविष्य में चुनाव लड़ पाएंगे इस पर बहुत संदेह होता है। नीतीश कुमार ने बहुत अच्छा किया जो इनका साथ छोड़ दिया क्योंकि यह तो सिर्फ सीटों के बंटवारे को ही अंतिम चुनाव मानकर चल रहे हैं। मेरे विचार से इंडिया गठबंधन का भविष्य बहुत ही अंधेरे में जा रहा है।

2– बुरे काम का बुरा नतीजा – सतपाल मलिक : लंबे समय से महसूस किया जा रहा था कि सतपाल मलिक एक बहुत ही चालाक आदमी है। उन्होंने जीवन में बहुतों को धोखा दिया। सभी राजनीतिक दलों को उन्होंने अंगूठा दिखाया लेकिन बहुत चालाक आदमी भी जीवन के अंतिम समय में समाज के सामने साफ साफ दिख ही जाता है। अब सतपाल मलिक भी सामने दिख रहे हैं। दुनिया को पता चल गया है कि यह आदमी कितना धूर्त था। कल सतपाल मलिक के यहाँ जो छापा पड़ा उस छापे से मलिक की बोलती बंद हो गई है। सतपाल मलिक भी अन्य राजनेताओं की तरह एक ही बात की रट लगा रहे हैं की मैं किसी से डरने वाला नहीं हूं। सच बात तो यह है कि नंगा आदमी किसी से नहीं डरता। मुझे तो यह साफ दिखता है कि आगे चलकर के सतपाल मलिक का बुढ़ापा कहीं कारागार में ही ना कटे। अच्छा है इस प्रकार के चालाक लोगों को सबक मिलना ही चाहिए।

3– आन्दोलन की प्रवृत्ति को निरुत्साहित करने की जरुरत : पूनम आई कौशिक एक प्रसिद्ध लेखक है उनके लेख में प्राय पढ़ता हूं। अभी 3 दिन पहले उन्होंने एक लेख अखबारों में प्रकाशित किया। उस लेख में उन्होंने बताया है कि किस प्रकार आंदोलनकारी प्रवृत्ति किसी भी देश को पीछे ले जाती है। स्वतंत्रता के बाद आंदोलन का कोई औचित्य नहीं था, लेकिन दिन–रात पेशेवर लोग आंदोलन को प्रोत्साहित करते रहे। जयप्रकाश आंदोलन से भी कुछ नहीं निकला अन्ना आंदोलन से भी कुछ नहीं निकला उल्टा आंदोलन के कारण देश की अर्थव्यवस्था को नुकसान हुआ। विदेशी हस्तक्षेप का मार्ग खुला, आंदोलन के कारण ही देश में अराजकता का वातावरण पैदा हुआ, नए–नए संगठन बनाकर सरकारों पर दबाव बनाने लगे ब्लैकमेल करने लगे। अब समय आ गया है कि आंदोलन को प्रतिबंधित कर दिया जाए।

मैं भी लंबे समय से आंदोलन के विरुद्ध लिखता रहा हूं। मुझे पूनम जी का यह लेख बहुत पसंद आया। यह लेख सबको पढना चाहिए साथ ही आंदोलन की प्रवृत्ति को निरुत्साहित करना चाहिए लोकतंत्र में किसी भी आंदोलन का कोई औचित्य नहीं हो सकता है। किसान आंदोलन को देखते हुए यह बात तत्काल आवश्यक हो जाती है।

मैंने अपने जीवन में अनेक आंदोलन देखे हैं स्वतंत्रता के बाद लोहिया जी ने गैर कांग्रेसो–वाद का आंदोलन शुरू किया था। जयप्रकाश नारायण ने भी एक आंदोलन

किया, भारतीय जनता पार्टी ने भी एक आंदोलन किया, अन्ना हजारे ने भी एक आंदोलन किया, इस तरह देश में कई बार आंदोलन हुए। आंदोलन से सरकार तो बदली लेकिन सरकार चली नहीं। आंदोलन ने व्यवस्था को तोड़ा लेकिन कोई व्यवस्था बना नहीं सके। कोई भी आंदोलन सफल नहीं हुआ। नरेंद्र मोदी इस बार प्रधानमंत्री बने हैं तो किसी आंदोलन की उपज नहीं है, बल्कि जन जागरण की उपज है। जन जागरण ने यह सिद्ध कर दिया है की आंदोलन का कोई औचित्य नहीं है। आंदोलन सरकार बदल सकते हैं सरकार चला नहीं सकते। पिछले आंदोलन की अगर तुलना करें तो वर्तमान किसान आंदोलन... आंदोलन के नाम पर एक कलंक ही है। पहले के आंदोलन में जन बल का प्रदर्शन था बाहुबल का प्रदर्शन नहीं था। आज तक किसी भी आंदोलन ने इस प्रकार हथियारों का प्रदर्शन नहीं किया, इस प्रकार किसान के नाम पर बुलडोजर और ट्रैक्टर लेकर किसी देश पर चढ़ाई नहीं कर रहे थे। आंदोलन के नाम पर जो कुछ दिखाया जा रहा है यह तो आंदोलन को बदनाम करने की बात है। मैं किसी आंदोलन का पक्षधर नहीं हूं और इस आंदोलन के नाम पर की गई गुंडागर्दी का तो बिल्कुल ही समर्थक नहीं हूं। बाहुबली की ताकत पर नक्सलवादियों में बहुत कुछ किया, बाहुबली की ताकत पर भिंडरावाले ने भी बहुत कुछ किया लेकिन बाहुबली की ताकत को आंदोलन का नाम नहीं दिया जा सकता।

4– <u>सावरकर गद्दार नहीं थे</u> : कल मेरे एक साम्यवादी मित्र में मुझे सावरकरवादी घोषित कर दिया तो दूसरी ओर मेरे एक सावरकरवादी मित्र ने मुझे कम्युनिस्ट घोषित कर दिया। सच्चाई यह है कि मैं इन दोनों में से कोई भी नहीं हूं। मैं गांधी को मानने वाला हूं जो ना कभी–इस्लाम समर्थक रहे और ना कभी उग्र हिंदुत्व के समर्थक। मैं सावरकर का इस लिए सम्मान करता हूं कि सावरकर ने स्वतंत्रता की लड़ाई में अपने जेल के पूर्व के जीवन का बहुत ही अच्छा उदाहरण प्रस्तुत किया इस लिए हम उनके त्याग और तपस्या को सलाम करते हैं। जेल जीवन के बाद उन्होंने परेशान होकर अंग्रेजों से समझौता किया और उस समझौते का ईमानदारी से पालन किया। सावरकर के जीवन को भीष्म पितामह तो कहा जा सकता है किंतु गद्दार नहीं कहा जा सकता क्योंकि सावरकर हिंदुत्व के पक्षधर थे लेकिन वह हिंदुत्व की सुरक्षा इस्लामिक तरीके से करना चाहते थे। वे हिंसा के पक्षधर थे और गांधी हिंदुत्व की सुरक्षा हिंदुत्व के तरीके से करना चाहते थे। तरीका अलग–अलग थे लेकिन लक्ष्य एक था। यदि सावरकर की तुलना साम्यवादियों से की जाए तो सावरकर साम्यवादियों की तुलना में कई गुना अच्छे थे क्योंकि सावरकर क्रांतिकारी थे स्वतंत्रता सेनानी थे साम्यवादी नहीं। यदि सावरकर की तुलना गांधी के साथ की जाए तो गांधी सावरकर की तुलना में कई गुना अच्छे थे क्योंकि गांधी बुद्धि से स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ना चाहते थे सावरकर भावना से लड़ना चाहते थे दोनों के मार्ग अलग–अलग थे गांधी का मार्ग सफल हुआ सावरकर का मार्ग असफल हुआ। इसलिए मेरे विचार से अब सावरकर प्रकरण को यहीं समाप्त कर देना चाहिए क्योंकि सावरकर गांधी की तुलना में कमजोर और कम्युनिस्टों की तुलना में बहुत ऊंचे माने जाते हैं। गांधी सर्वश्रेष्ठ सफल स्वतंत्रता सेनानी रहे हैं सावरकर असफल स्वतंत्रता सेनानी रहे हैं दोनों में इतना ही फर्क है।

5– <u>पांच प्रकार के बदलाव की तैयारी करे मोदी सरकार</u> : शेखर गुप्ता भारत के प्रसिद्ध पत्रकार हैं। मैं तो उन्हें बहुत गंभीर विचारक मानता रहा हूं। उन्होंने आज एक लेख प्रकाशित किया है जो दैनिक भास्कर में छपा है। उन्होंने 3 महीने के बाद को राजनैतिक पृष्टभूमि का आकलन करते हुए यह सुझाव दिया है कि वर्तमान राजनैतिक स्थिति मनमोहन

सिंह के कार्यकाल से बिल्कुल अलग है। मनमोहन सिंह एक अल्पमत सरकार चला रहे थे जिसमें देश विरोधी साम्यवादियों को भी साथ रखना उनकी मजबूरी थी। उस समय विपक्ष भी मजबूत स्थिति में था। मनमोहन सिंह सब प्रकार के सुधार चाहते थे लेकिन नरेगा और सूचना अधिकार के अतिरिक्त वे कुछ नहीं कर सके। नरेंद्र मोदी पूर्ण बहुमत से भी कई गुना अधिक मजबूत है और विपक्ष भी करीब–करीब समाप्त ही है। ऐसी परिस्थितियों में नरेंद्र मोदी को हिम्मत करके पांच प्रकार के बदलाव को प्राथमिकता देनी चाहिए। (1) जातीय आरक्षण पर कोई निर्णायक घोषणा आवश्यक है। किसी भी रूप में जातिवाद का समर्थन नहीं करना चाहिए। (2) कृषि सुधार के संबंध में नई परिस्थितियों में सरकार को फिर से हिम्मत करनी चाहिए। MSP समस्या का समाधान नहीं बल्कि एक समस्या है। खुले बाजार को एक समाधान के रूप में स्वीकार करना चाहिए। सरकार को घोषणा करनी चाहिए कि सरकार किसी भी रूप में बाजार में हस्तक्षेप नहीं करेगी। (3) गरीबों की सहायता के नाम पर देश में जो वातावरण बन रहा है वह बहुत गलत है। नरेगा और निःशुल्क भोजन को छोड़कर बाकी सब योजनाओं को या तो बंद कर देना चाहिए या तो एकमुस्त नगद सहायता दे दें। (4) UPSC की परीक्षाओं को महत्वपूर्ण बनाए रखने से युवा पीढ़ी गलत दिशा में जा रही है। सरकारी नौकरी के प्रति आकर्षण लगातार बढ़ रहा है जो बहुत घातक है। इस संबंध में भी निर्णायक बदलाव करने की जरूरत है। (5) दल बदल कानून ने किसी प्रकार का कोई अच्छा प्रभाव न छोड़कर राजनीति में सत्ता के केंद्रीयकरण को बढ़ावा दिया है। दल बदल कानून को समाप्त कर देना चाहिए।

मैं भी पिछले पचास वर्षों से इसी प्रकार की बातें लिखता रहा हूं। शेखर गुप्ता जी भी इसी नतीजे पर पहुंचे हैं और नरेंद्र मोदी भी इसी नतीजे पर पहुंचेंगे। मुझे पूरा–पूरा विश्वास है कि देश और समाज के हित में शेखर गुप्ता जी की पांचो बातें व्यवस्था परिवर्तन से जुड़ी है। मैं इन सभी मामलों में शेखर गुप्ता जी का समर्थन करता हूं और सरकार से अधिक उम्मीद करता हूं कि भारत की जनता तो दो महीने बाद सरकार को सब कुछ दे देगी और सरकार को ही पहल करनी है। देखना है कि वह इन मामलों में कितना आगे तक बढ़ पाती है।

6– <u>हिन्दू मुसलमान के विवाद का लोकतांत्रिक समाधान हो</u> : गांधी एकमात्र ऐसे व्यक्ति रहे हैं जिन्हें समाजशास्त्र का भी बहुत अच्छा ज्ञान था और राजनीति शास्त्र का भी। जब भारत गुलाम था तब यह गांधी की दूरदर्शिता ही थी कि उन्होंने हिंदू मुस्लिम एकता का नारा देकर अंग्रेज सरकार को दुश्मन नंबर एक घोषित किया। जब खिलाफत आंदोलन शुरू हुआ और तुर्की के कट्टरपंथी मुसलमानों ने ब्रिटेन समर्थक कमालपाशा के खिलाफ मोर्चा खोल दिया। तब गांधी की दूरदर्शिता ही थी कि उन्होंने भारत में भी खिलाफत आंदोलन का समर्थन किया। भारत में अनेक ऐसे लोग थे जो स्वतंत्रता के पूर्व भी अंग्रेज सत्ता की तुलना में मुसलमानों को अधिक खतरनाक मानते थे। ऐसे लोगों ने उस समय खिलाफत आंदोलन का विरोध किया था जो अप्रत्यक्ष रूप से अंग्रेज़ सरकार को खुश करने वाला था लेकिन भारत के अधिकांश हिंदुओं ने गांधी का साथ दिया। गांधी का मानना था कि अंग्रेजों के जाने के बाद हम हिंदू मुसलमान का विवाद लोकतांत्रिक तरीके से निपट लेंगे क्योंकि हिंदुओं की संख्या अस्सी प्रतिशत है और मुसलमान की जनसंख्या 20 प्रतिशत। मुट्ठी भर अंग्रेजों के दलाल हिंदू स्वतंत्रता की तुलना में हिंदू मुसलमान समस्या को पहले निपटाना चाहते थे जो पूरी तरह गलत कदम था। नरेंद्र मोदी और

मोहन भागवत ने भले ही देर से गांधी को समझा हो लेकिन दोनों ने यह बात अच्छी तरह समझ ली है कि गांधी का मार्ग ही वास्तविक हिंदुत्व है और गांधी का मार्ग वास्तविक समाज व्यवस्था है। आज भी कट्टरपंथी हिंदू और कट्टरपंथी मुसलमान नरेंद्र मोदी और मोहन भागवत का विरोध इसलिए करते हैं कि यह दोनों गांधी मार्ग पर चल रहे हैं। मैं बचपन से ही इस बात को अच्छी तरह समझ रहा था कि गांधी मार्ग ही हिंदुत्व का सबसे अच्छा मार्ग है। इसलिए हम लोगों की संस्था ज्ञान यज्ञ परिवार भी वैचारिक संतुलनवादी हिंदुत्व की प्रयोगशाला के रूप में लगातार सक्रिय है।

7– आगामी नए सरकार की घोषणाएं लोकहितकारी : मैं नरेंद्र मोदी से जिस गति की अपेक्षा कर रहा था उसकी तुलना में वे कई गुना अधिक तेज गति से आगे बढ़ रहे हैं। मैं समझता था कि 2029 के बाद भारत में विपक्ष खत्म हो जाएगा लेकिन अब तो 2024 में ही ऐसी संभावना दिखने लगी है। एक तरफ तो नरेंद्र मोदी और अमित शाह पूरे आत्मविश्वास से आगे बढ़ रहे हैं तो दूसरी ओर राहुल गांधी का आत्मविश्वास टूटता जा रहा है। भारत की राजनीति एक पक्षीय दिशा में आगे बढ़ रही है यह हमारे लिए शुभ लक्षण है। कल नरेंद्र मोदी ने बड़े आत्मविश्वास के साथ यह घोषणा की कि भारत में सरकार को सिर्फ कमजोरों की मदद तक सीमित रहना चाहिए, आम लोगों के दैनिक क्रियाकलाप में सरकार को हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। कल ही टीवी चैनल 9 में अमित शाह ने भी कुछ घोषणाएं की। उन्होंने यह बताया कि भारत में इन चुनाव के पूरा होने के बाद समान नागरिक संहिता लागू कर दी जाएगी। अमित शाह जी ने यह भी बताया कि इन चुनाव के बाद अगले चुनाव एक भारत एक चुनाव के आधार पर होंगे। अमित शाह न यह भी कहा कि अगले 3 वर्षों में भारत नक्सलवाद से पूरी तरह मुक्त हो जाएगा। वास्तव में यह तीनों ही बड़ी–बड़ी घोषणाएं हैं। नरेंद्र मोदी ने भी जो घोषणा की है वह कोई साधारण घोषणा नहीं है। मैं नरेंद्र मोदी और अमित शाह को इस बात के लिए बधाइ देता हूं कि वह 70 वर्षों की सड़ी–गली बीमारी से देश को मुक्त करने जा रहे हैं। मेरी शुभकामनाएं उनके साथ हैं।

8– व्यक्ति की असीम स्वतंत्रता का बाधा रहित मिलना ही न्याय है : पिछली रात 8:00 बजे मार्गदर्शन संस्थान द्वारा आयोजित चर्चा कार्यक्रम में शामिल हुआ। चर्चा का विषय था न्याय और व्यवस्था। न्याय और व्यवस्था को लगभग एक साथ जोड़ दिया जाता है जबकि दोनों ही तंत्र के साथ तो जुड़े हुए हैं लेकिन दोनों का कार्य अलग–अलग होता है और दोनों की परिभाषाएं भी अलग–अलग होती हैं। किसी भी व्यक्ति की असीम स्वतंत्रता का बाधा रहित मिलना यह न्याय है और उस बाधा को दूर करने की गारंटी देना व्यवस्था है। लोकतंत्र में न्यायपालिका न्याय को परिभाषित करती है और कार्यपालिका तथा विधायिका उसमें आने वाली बाधाओं को दूर करने का प्रयत्न करती हैं। इस तरह इन दोनों की भूमिका अलग–अलग है लेकिन एक दूसरे की पूरक है क्योंकि न्याय और व्यवस्था दोनों मिलकर ही व्यक्ति की असीम स्वतंत्रता की सुरक्षा करती हैं। इस तरह यह माना गया है कि तंत्र का दायित्व सुरक्षा और न्याय तक सीमित है सुरक्षा और न्याय के अतिरिक्त जितने भी कार्य हैं वे सब तंत्र के स्वैच्छिक कर्तव्य हं दायित्व नहीं। इस विषय पर एक घंटे तक काफी चर्चा हुई चर्चा में प्रश्न उत्तर भी हुआ और चर्चा में शामिल सब लोगों का ज्ञानवर्धन भी हुआ। न्याय और व्यवस्था को परिभाषित करना बहुत जटिल कार्य होते हुए भी सफलतापूर्वक इस विषय पर चर्चा आयोजित की गई।

कार्यक्रम

ज्ञानयज्ञ परिवार ने उत्सवपूर्वक मनाया महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जयन्ती :

दिनांक 5 मार्च 2024 को ज्ञानयज्ञ परिवार रामानुजगंज द्वारा महर्षि दयानंद सरस्वती के 200वीं जयंती के उपलक्ष्य में ज्ञानयज्ञ परिवार की मासिक बैठक के साथ एक उत्सव संपन्न हुआ। ज्ञान यज्ञ परिवार रामानुजगंज इकाई के संरक्षक कन्हैयालाल अग्रवाल जी के बड़े भाई राजेंद्र अग्रवाल जी के आवास पर यह कार्यक्रम आयोजित किया गया था। कार्यक्रम में संघ के जिला संघचालक श्री सुभाष जायसवाल जी, वयोवृद्ध अध्यापक पाठक गुरुजी आर्य एवं समाज के मूर्धन्य एवं पुराने कार्यकर्ताओं के साथ नगर के तमाम गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। एडवोकेट आर के पटेल एवं विमलेश सिन्हा, अशोक जायसवाल, राजेश प्रजापति आदि ने सभा को संबोधित करते हुए ऋषिवर दयानन्द जी के जीवन–दर्शन, कृतित्व एवं उनके समाज सुधारक आंदोलनों व आध्यात्मिक ज्ञान आदि को स्मरण किया। कार्यक्रम मं संघ के जिला संघचालक श्री सुभाष जायसवाल जी ने बताया कि बजरंग मुनि जी की प्रेरणा से वेदों को समझने पढ़ने का अवसर मिला। स्वामी दयानंद के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए इस्लाम, यहूदी, ईसाई मतों के पाखंडों के खंडन मंडन एवं पथभ्रष्ट हो चुके स्वजनों को हिंदू धर्म में पुनः घर वापसी के लिए श्री जायसवाल जी ने उनके योगदानों को याद किया।

कन्हैयालाल अग्रवाल जी ने स्वामी जी के स्त्रियों, दलितों सहित सर्वसमाज को सामाजिक अधिकार देने, कर्मकाण्ड और आडम्बरों में आकंठ डूबे भारतीय सनातन संस्कृ ति को बेड़ियों से मुक्त कर वैचारिक संतुलनवादी दृष्टिकोण से अवगत कराया। कार्यक्रम का संचालन करते हुए ज्ञानेंद्र आर्य जी ने वेदों का वर्तमान स्वरूप और वेदज्ञान का प्रचार करने के संकल्प और स्वराज के प्रचारक के रूप में स्वामी जी के अप्रतिम योगदान को कृतज्ञतापूर्वक याद किया।

रात्रि करीब सवा नौ बजे मोहन गुप्ता जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में ही सभा के समापन की घोषणा की एवं उपस्थित सभी साथियों से भोजन प्रसाद ग्रहण करने का सादर आग्रह किया। सभा की सफलता के लिए उन्होंने सबका आभार प्रकट किया।

"ज्ञानोत्सव"

ज्ञानयज्ञ परिवार रामानुजगंज द्वारा मई माह में तीन दिवसीय ज्ञानोत्सव कार्यक्रम का आयोजन करने की योजना बन रही है। प्रातः यज्ञ और विचार मंथन के साथ शुरू होकर सायंकालीन बेला में वैदिक कथावाचक सुनील देव शास्त्री एवं साध्वी प्रज्ञा साधना जी के द्वारा भागवत कथा और सुप्रसिद्ध समाजविज्ञानी मौलिक विचारक बजरंग मुनि जी के द्वारा ज्ञानकथा का वाचन होगा। 24–25–26 मई 2024 को होने वाले इस कार्यक्रम का मुख्य लक्ष्य निम्नवत हैं–

• देशभर से सत्यासत्य को निर्भीक और यथार्थवादी दृष्टिकोण रखने वाले 100 मार्गदर्शकों की समिति बनाने की परिकल्पना के आधार पर नींव के पत्थरों का चयन बजरंग मुनि जी के अनुभवों के आधार पर 10 संस्थापक सदस्यों के नामों पर एक आम सहमति साथियों के साथ मिलकर बनायी जा रही है।

• बजरंग मुनि जी के साथ लगातार गम्भीर विचार मंथन करने वाले 20 साथियों के द्वारा उनकी कही बातों को सूत्र रूप में तैयार कर एक वृहत संकलन भी इस कार्यक्रम में समाज को समर्पित किया जाएगा।

• रामानुजगंज नगर में मुनि जी के आवास में एक ज्ञान केंद्र की शुरूआत भी की जाएगी।

• मदारी आर्ट्स द्वारा नव निर्मित फिल्म प्रयोग भी पहली बार दिखाई जाएगी।

• दिनभर अन्य कार्यक्रम चलते रहेंगे।

उक्त कार्यक्रम में आप सब सादर आमंत्रित है। कृपया आने की पूर्व सूचना 8318621282 अथवा 7869250001 नंबरों पर अवश्य दें।

सूत्र रूप कुछ महत्वपूर्ण निष्कर्ष :

100 वैचारिक

1000. किसी निष्कर्ष तक पहुँचने में परिभाषाएँ बहुत उपयोगी होती हैं। परिभाषाएं विचार मंथन से निकली किसी विश्वसनीय अनुसंधान इकाई द्वारा घोषित होनी चाहिए। यदि प्रचलित परिभाषा गलत हो तो उस आधार पर निकले निष्कर्ष का गलत होना निश्चित होता है। वर्तमान विश्व में प्रचलित सामाजिक व्यवस्थाओं के लिए उत्तरदायी अनेक परिभाषाएं या तो असत्य है या विकृत हैं।

1001. समाज में प्रचलित विकृत परिभाषाओं में स्वराज्य, संविधान, मूल अधिकार, अपराध, धर्म, समाज, महंगाई, बेरोजगारी, समाजवाद, समानता, नागरिक संहिता, गरीबी आदि विषय प्रमुख हैं। परिभाषाओं को जानबूझकर योजनापूर्वक विकृत करने का कार्य अलग–अलग समय पर अलग–अलग विचारधाराओं ने किया किन्तु इस कार्य में मुख्य भूमिका साम्यवादियों की रही है। पश्चिम के पूंजीवादियों ने भी आंशिक रूप से यह कार्य किया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में विचार मंथन की प्रक्रिया बंद हो जाने से यहाँ भी ये विकृत परिभाषाएं पढ़ाई जाने लगीं और इसी आधार पर गलत निष्कर्ष भी निकलते चले गए।

1002. हर असामाजिक कार्य समाज विरोधी नहीं होता किंतु हर समाज विराधी कार्य असामाजिक भी होता है और समाज विरोधी भी ।

1003. चार सकारात्मक दिशाये होती है– (1) प्रशंसा (2) समर्थन (3) सहयोग (4) सहभागिता। वर्तमान शासन व्यवस्था समस्याओं का समाधान कर पायेगी ऐसे लक्षण दिख

रहे है किन्तु यह स्पष्ट नहीं दिखता कि समाज का अस्तित्व सदा सदा के लिए राज्य में विलीन हो जायेगा अथवा राज्य शासक की जगह प्रबंधक की ओर बढेगा। जब तक यह साफ नही दिखे कि भारत विचार मंथन की दिशा में बढ रहा है, तानाशाही और लोकतंत्र की जगह लोकस्वराज्य की ओर जा सकता है, तब तक हमे राज्य से सहभागिता नहीं करनी चाहिये। प्रशंसा, समर्थन और कभी कभी सहयोग भी किया जा सकता है किन्तु सहभागिता नहीं।

1900. अब तो संपूर्ण समाज व्यवस्था को नया स्वरूप देना होगा। जबकि सच्चाई इन सबसे कोसों दूर है। न तो पुराना आंख मूँदकर अनुकरण करने योग्य है न ही पुराना आंख मूँदकर छोड़ देने योग्य।

101 वैचारिक परिभाषाएँ

1010. विचारकों तथा मार्गदर्शकों द्वारा विचार मंथन के माध्यम से निकाले गए निष्कर्ष यथार्थ होते हैं और उन निष्कर्षो को बिना विचारे आचरण में लाना परम्परा।

1011. प्रकृति के अनसुलझे रहस्यों को भूत कहते हैं और सुलझ चुके रहस्यों को विज्ञान कहते हैं। जादू–टोना, प्रेत, तंत्र–मंत्र आदि सभी रहस्य इसी श्रेणी में आते हैं। पच्चानवें प्रतिशत ऐसी घटनाएं, असत्य, भ्रम–जाल या हमारे अज्ञान का लाभ उठाने का प्रयास होती हैं, अतः सामान्यतया ऐसी बातों या घटनाओं को असत्य मानना चाहिए, फिर भी प्रकृति के रहस्य असीम हैं और विज्ञान की अपनी सीमाएँ हैं, अतः किसी प्रत्यक्ष रहस्य को अस्वीकार करने की जिद नहीं करनी चाहिए। भ्रम और भूत एक–दूसरे के पूरक होते हैं। प्रत्येक एक–दूसरे की वृद्धि में सहायता करते हैं।

1012. सत्य और अहिंसा के मार्गदर्शन में तत्कालीन समस्याओं के समाधान का प्रयास ही गांधी मार्ग कहलाता है।

1013. किसी काय के परिणाम की सम्भावना और यथार्थ के बीच का अन्तर ही सुख या दुःख होता है और इस अंतर की मात्रा ही सुख और दुःख की मात्रा होती है। सुख और दुःख की उत्पत्ति मन से है। घटनाओं से इसका कोई संबंध नहीं होता। सुख और दुःख का कारण होता है परिणाम की सम्भावना का गलत आकलन। आकलन जितना ही यथार्थ परक होगा सुख या दुःख उतना ही कम होगा या नहीं होगा। व्यक्ति को परिस्थितियों के अनुसार परिणामों के ठीक–ठाक आकलन की आदत डालनी चाहिये।

1014. सिद्धान्त और व्यवहार के संतुलन से बना मार्गदर्शन नीति होती है।

1015. अपने मनोभाव और विचार दूसरे व्यक्ति तक ठीक उसी अर्थ में पहुँचाने के माध्यम को भाषा कहते हैं।

1016. भारतीय जीवन पद्धति अकेली ऐसी प्रणाली है जिसमे कुछ विचारक सामाजिक विषयों पर अनुसंधान करते है और निष्कर्ष भावना प्रधान लोगो तक इस तरह पहुंचता है कि वह निष्कर्ष सम्पूर्ण समाज के लिये सामाजिक कर्तब्य बन जाता है।

102 विचारधारा

1020. भारत में स्वतंत्रता के समय से ही दो विचारधाराएँ एक दूसरे के विपरीत प्रतिस्पर्धा कर रही थीं (1)गॉधी विचार (2) नेहरु विचार। गॉधी विचारधारा आर्य संस्कारों से प्रभावित थी जिसे अब वैदिक, सनातन हिन्दू या भारतीय संस्कृति भी कहते हैं, तो नेहरु विचारधारा में आर्य संस्कारों को छोड़कर पाश्चात्य, इस्लामिक, साम्यवादी तथा अन्य सबका मिलाजुला समावेश था। इसमें भी सर्वाधिक प्रभाव समाजवादी धारा का था।

1021. अभी दुनिया में और विशेषकर भारत में दो विचार धाराएँ एक–दूसरे के विपरीत काम कर रही है। पहली वह विचारधारा जो यह मानते हैं कि जो कुछ प्राचीन है वह सब ठीक है और उसमे संषोधन की कोई आवश्यकता नही है। दुसरी विचारधारा यह मानती है कि जो कुछ प्राचीन है वह पूरी तरह गलत है और उसमें आमूल चूल बदलाव होना चाहिये। अब एक तीसरी विचारधारा बननी चाहिये जो प्राचीन विचारधारा में संसोधन कर के नया मार्ग प्रशस्त करें।

1022. स्वतंत्रता के समय भारत में तीन विचारधाराएं लगभग समान रूप से सक्रीय थीं 1. गांधी विचारधारा जो किसी भी कीमत पर भारत को स्वतंत्र देखना चाहती थी चाहे उसके लिए मुसलमानों के साथ समझौता हीं क्यों न करना पड़े। दूसरी संघ विचारधारा जो किसी भी स्थिति में मुसलमानों को मजबूत नहीं देखना चाहती थी, भले ही स्वतंत्रता देर से मिले। तीसरी इस्लामिक विचारधारा थी जो हर हालत में हिन्दुओं को कमजोर करना चाहती थी।

1023. हमने अर्थनीति बनाते समय पश्चिम के व्यक्तिगत संपत्ति, मार्क्स के सामूहिक संपत्ति तथा गांधी जी के ट्रस्टीशिप के सिद्धान्त के साथ इस तरह सामंजस्य किया कि व्यक्ति की व्यक्तिगत सम्पत्ति का अधिकार समाप्त होकर सम्पत्ति परिवार की सामूहिक होगी जिसमें प्रत्येक व्यक्ति का समान अधिकार होगा।

110 अहिंसाः

1103. सत्य और अहिंसा की दिन रात माला जपने वाले भी सत्य की ठीक से खोज किये बिना ही अपने गुट द्वारा फैलाये गये असत्य को फैलाना शुरू कर दें तो कष्ट होना स्वाभाविक है।

1104. अहिंसा की लड़ाई रणक्षेत्र में नहीं, हृदय क्षेत्र में होती हैं लेकिन लड़ाई की तैयारी तो अहिंसा को चाहिए ही। सारे संसार में अहिंसा का प्रचार हो जाने के बाद भी तैयारी की यह जरूरत न रहे, ऐसी बात नहीं। कभी एक बार का कमाया हुआ धन जन्म भर खाने की गुंजाइश न तो हिंसा में है और न अहिंसा में ही। प्रतिकार–शक्ति सर्वदा जाग्रत रखनी ही होगी। अहिंसक जीवन के माने प्रासंगिक त्याग ही नहीं, वरन् निरन्तर त्याग है और निरात्याग ही नहीं, अपितु त्याग का आनन्द भी है।

1105. अहिंसक रचना करना किसी भी तरह असम्भव नहीं है। ऐसी अहिंसक रचना जितनी स्थायी होगी, उतनी दूसरी काई भी व्यवस्था नहीं हो सकती।

1106. अहिंसा का अर्थ शत्रु से पराजित होने की सीमा तक नहीं जाना चाहिए था।

1107. अहिंसा सर्वश्रेष्ठ धर्म माना गया है। धर्म की रक्षा करना राज्य का दायित्व होता है न कि धर्म पर आचरण करना। शान्ति व्यवस्था बनाये रखने के लिये राज्य को कभी भी अहिंसा को अपना मार्ग नही मानना चाहिये। यदि राज्य ऐसी भूल करता है तो उसके दुष्परिणाम होते है और समाज मे हिंसा की आवश्यकता बढ़ती चली जाती है।

1108. अहिंसा और कायरता मे बहुत फर्क होता है। हर कायर अपने को अहिंसक मानने की भूल करता है। बुद्ध और महावीर ने हिंसा और अहिंसा के बीच के संतुलन को बिगाडा। उन्होंने अहिंसा को मार्ग की जगह लक्ष्य मान लिया। इसका परिणाम हुआ कि राज्य मे उचित अनुचित का भ्रम पैदा हुआ और समाज में संतुलन की जगह कायरता का विकास हुआ। गांधीवादियों ने अपनी कायरता को छिपाने के लिये अहिंसा शब्द को ढाल बनाया।

1109. बुद्ध, महावीर और यीशु मसीह की कायरता प्रधान शिक्षाओं के परिणाम स्वरूप इस्लाम और साम्यवाद सारी दुनियां में बहुत तेजी से आगे बढा। क्योंकि इन तीनों की शिक्षायें अहिंसा को कायरता में बदल रही थी।

1110. स्वतंत्रता के समय गांधी हत्या के बाद गांधीवादियों ने भूल से अहिंसा को मार्ग की जगह लक्ष्य मान लिया। इसका अर्थ हुआ कि राज्य को भी उचित की जगह न्यूनतम हिंसा का उपयोग करना चाहिये। मार्ग को लक्ष्य मानने की गांधीवादी भूल का लाभ उठाया सावरकरवादियों ने, साम्यवादियों और कटटरपंथी मुसलमानो ने। इन तीनो ने मिलकर समाज मे हिंसा की आवश्यकता की भूख पैदा की। अहिंसा की पक्षधर गांधीवादी सरकारे अराजकता को नही रोक सकी। परिणाम स्वरूप समाज मे अराजकता से निपटने के लिये एक ऐसे राज्य की आवश्यकता महसूस की गयी जो अहिंसा की सुरक्षा क लिये हिंसा को एक उचित मार्ग मानता हो। हमे इस मामले मे नरेन्द्र मोदी से अधिक अच्छा व्यक्ति कोई नही मिला। परिणाम आज सबके सामने है।

1111. हर मजबूत हिंसा को उचित मानता है और हर कमजोर कायरता को।

111 हिंसा और अहिंसाः–

1112. मार्गदर्शक तथा पालक को हमेशा अहिंसक होना चाहिए। रक्षक हिंसक हो सकता है। सेवक जिसके साथ जुड़े उसी के अनुसार आचरण करे। लोकतंत्र में हिंसा रक्षक को छोड़कर पूरी तरह प्रतिबंधित होनी चाहिए। जब गुलामी हो तब मार्ग हिंसक भी हो सकता है। जो लोग लोकतंत्र में हिंसा का समर्थन करते हैं वे भी गलत हैं और हिंसा करने वाले भी। हिंसा का समर्थन करने वाले धूर्त होते हैं और करने वाले मूर्ख। हिंसा समर्थक स्वयं हिंसा नहीं करते बल्कि दूसरों को प्रेरित करते हैं। नासमझ लोग प्रेरित होकर हिंसा करते हैं।

1113. हिंसा या अहिंसा को कोई सिध्दांत नहीं मानना चाहिए क्योंकि यह तो मार्ग है जो देश–काल परिस्थिति अनुसार बदलता रहता है। महावीर की अहिंसा एक सिद्धान्त है जबकि गाँधी की अहिंसा एक मार्ग है।

1114. हिंसा के व्यापकतम और अधिकतम प्रयोग के बाद हिंसा त्याग कर अहिंसा को स्थान दे दें, इसके सिवा कोई अन्य उचित मार्ग नहीं है।

1115. प्रतिस्पर्धा में 'एक की जीत यानि दूसरे की हार' यह रीति हिंसा की है। अहिंसा में तो जो एक की जीत है, वह दूसरे की जीत है। अगर कोई वाद विषयक प्रश्न शेष रह ही जाय, तो अहिंसा का तरीका अत्यन्त सरल है।

1116. यदि पूरी तरह गुलामी हो ओर मुक्ति का मार्ग न दिखे तब हिंसा या अहिंसा के मार्ग मे से एक चुना जा सकता है। लोकतंत्र मे अहिंसा के अतिरिक्त कोई अलग मार्ग नही है।

1117. मानव स्वभाव तापवृद्धि के पक्षधर संगठनों से जुड़े लोग आपस में हिंसक टकराव भी करते है तो हमें किसी एक पक्ष को जोर देकर शांत नहीं कराना चाहिए, क्योंकि यह कार्य उस पक्ष के साथ अन्याय हो जायेगा किन्तु यदि किसी ऐसे समूह या व्यक्ति के साथ बलप्रयोग होता है जो किसी हिंसा समर्थक संगठन से नहीं जुड़ा है तब हमें अपनी पूरी शक्ति लगाकर उसकी सुरक्षा करनी चाहिए।

1118. अहिंसा की सुरक्षा के उद्देश्य से राज्य द्वारा किसी भी सीमा तक हिंसा का प्रयोग किया जा सकता है। शांति व्यवस्था हमारा लक्ष्य होता है और हिंसा तथा अहिंसा मार्ग। भारतीय जीवन पद्धति में तीन वर्ण मार्गदर्शक, पालक और सेवक पूरी तरह अहिंसक होते है इसके विपरीत रक्षक अधिकतम हिंसक। इस तरह हिंसा और अहिंसा का सामाजिक तालमेल होता है।

1119. आज समाज में बढती हिंसा का मुख्य कारण तो शासन की अहिंसा नीति में ही छिपा है। गांधी ने राज्य को न्यूनतम हिंसा की सलाह नहीं दी और यदि गांधी ने सलाह दी भी हो तो वह सलाह गलत है। राज्य को न्यूनतम नहीं बल्कि समुचित हिंसा का उपयोग करना चाहिये। वर्तमान समय में किसी भी नागरिक द्वारा किसी भी परिस्थिति में हिंसा का समर्थन अथवा इस का प्रयोग गलत है।

1120. कायरता जब उबाल खाती है तो क्षणिक हिंसा का आक्रोश प्रकट होता है। यह उबाल भावनात्मक होता है तथा तात्कालिक होता है। उबाल समाप्त होते ही व्यक्ति में अधिक कायरता आ जाती है।

1121. समाज मे हिंसा और संगठन का कोई औचित्य नहीं है और राज्य व्यवस्था मे अहिंसा का कोई औचित्य नहीं है।

1122. स्पष्ट है कि भारत की सामाजिक व्यवस्था में अहिंसा की जगह कायरता अधिक व्यापक दिखती है। हिंसा समर्थक सभी संगठनों से एक साथ निपटना समाज के लिये कठिन है। इसलिये शत्रु का शत्रु मित्र होता है, इस आधार पर अल्पकाल के लिये दो दिशाओं में ध्रुवीकरण हो रहा है। एक तरफ संघ परिवार के विरूद्ध संगठित इस्लाम और साम्यवाद है तो दूसरी तरफ संगठित इस्लाम और साम्यवाद के विरूद्ध संगठित हिन्दुत्व है जिसे हम संघ परिवार कहते है। मैं तो पूरी तरह अहिंसा का पक्षधर हूँ और राज्य को अहिंसा से दूरी बनानी चाहिये। मै चाहता हूँ कि वैचारिक तथा सामाजिक धरातल पर

किसी भी प्रकार की हिंसक विचार धारा का विरोध करना चाहिये और राजनैतिक धरातल पर हिंसक प्रवृत्तियो के कुचलने के लिये किसी भी सीमा तक राज्य को मजबूत होना चाहिये।

1123. अहिंसा या हिंसा परिस्थिति अनुसार मार्ग होता है, सिद्धांत नहीं। गांधी के बाद गांधीवादियों ने अहिंसा को सिद्धांत मान लिया तो सावरकरवादियों ने हिंसा को।

1124. शक्ति प्रयोग और अहिंसा के प्रयोग का परिस्थिति के अनुसार निर्णय करना चाहिए न कि सिद्धांत के अनुसार। हिन्दू धर्म में व्याप्त एक पक्षीय हिंसा ने बुद्ध और जैन को पैदा किया तथा बुद्ध और जैन की एक पक्षीय अहिंसा ने भारत को गुलामी की ओर धकेल दिया। इसी तरह यहूदियों की एक पक्षीय हिंसा ने ईसाइयत को जन्म दिया और ईसाईयों की एक पक्षीय अहिंसा से इस्लाम पैदा हुआ। इस्लाम की एक पक्षीय हिंसा के परिणाम शीघ्र ही आने की सम्भावना है।

1125. गांधीजी की अहिंसा परिस्थितियों के कारण सफल हुई न कि सिद्धान्त से। यदि बिटिश शासन के स्थान पर मुस्लिम या साम्यवादी देशों की गुलामी होती तो गांधीजी की अहिंसा सफल नहीं होती। हिंसा का मार्ग अंतिम विकल्प है न कि प्रथम। स्वतंत्रता संघर्ष में गांधीजी का निर्णय उचित था और हिंसा के पक्षधरों का गलत। गांधी जी अहिंसा को कायरता क विरूद्ध शस्त्र के समान उपयोग करते थे किन्तु वर्तमान में अहिंसा के पक्षधर अपनी कायरता को ढकने के लिए अहिंसा को ढाल के रूप में उपयोग करते हैं।

113 सामाजिक हिंसा और सरकारी हिंसा

1130. लोकतंत्र हो तब हिंसा का समर्थन सिर्फ वही लोग करते हैं जो फिर से अपनी तानाशाही स्थापित करना चाहते हैं। इस्लाम, साम्यवाद और सावरकरवादियों का चरित्र कभी लोकतांत्रिक नहीं रहा।

1131. समाज को सुरक्षा के प्रति आश्वस्त रखने के लिये राज्य को संतुलित हिंसा का मार्ग अपनाना चाहिये। यदि राज्य आवश्यकता से कम बल प्रयोग करता है तो समाज में असुरक्षा की भावना पैदा होती है और ऐसी असुरक्षा की भावना ही समाज में हिंसा को प्रोत्साहन देती है। उसके परिणाम स्वरुप समाज में अपराधियों के मन से भय और समाज के मन से कानून के प्रति विश्वास घट जाता है।

1132. यदि अहिंसा मार्ग रहे तब तो कोई दिक्कत नहीं। तानाशाही के विरूद्ध वह शस्त्र का काम करती है तो लोकतंत्र में व्यवस्था का। किन्तु यदि अहिंसा सिद्धान्त बन जावे तो वह राज्य को संतुलित बल प्रयोग के स्थान पर न्यूनतम बल प्रयोग का संदेश देती है। इससे समाज में असुरक्षा का भाव पैदा होता है।

1133. लोकतंत्र में समाज को हिंसा को छोड़ देना चाहिए और राज्य को आवश्यकतानुसार हिंसा मार्ग पकड़ना चाहिए, किन्तु हुआ ठीक उल्टा। राज्य ने आवश्यकता से कम हिंसा का मार्ग पकड़ा जिसके परिणामस्वरूप समाज में हिंसा के प्रति समर्थन और विश्वास बढ़ा।

1134. यह मान्यता रही है कि हिंसा पर निर्मित राज्य पद्धति टिक सकती है। वस्तुतः अब तक के सारे इतिहास सभी ने राज्य पद्धति को स्थायी बनाने के लिए हिंसा के ही प्रयोग किये हैं। किन्तु कोई भी राज्य पद्धति हिंसा के आधार पर टिक सकी हो, ऐसा अनुभव कहीं भी नहीं हुआ।

1135. सामाजिक हिंसा का किसी भी परिस्थिति में चाहे वह हिंसा किसी के द्वारा क्यों न की जाये आलोचना तो होनी ही चाहिये, यदि संभव हो तो विरोध भी। सरकारी हिंसा का मैं समर्थक हूँ जब तक विरोध करने का कोई स्पष्ट कारण न हो। सामाजिक हिंसा का समर्थन भी बहुत घातक है तथा सरकारी हिंसा का विरोध भी घातक है। यदि आप मानते है कि भारत में लोकतंत्र है तो आपको सामाजिक हिंसा का विरोध करना ही चाहिए।

1136. बिना सोचे समझे हिंसक उन्माद यदि हमेशा ही लाभदायक होता तो आज मुज्जफरनगर में इतनी बड़ी संख्या में मुसलमान नही मारे जाते।

1137. यदि भगत सिंह, सुभाषचंन्द्र बोस अथवा चन्द्रशेखर आजाद भी आज जीवित होते तो वे भी किसी तरह हिंसा का समर्थन नही करते। वे भी साम्यवाद अथवा इस्लाम का तो समर्थन बिल्कुल करते ही नहीं। सावरकरवादियों की उग्रवादी नीतियों का भी समर्थन नहीं करते।

1138. 1. तानाशाही से मुक्ति के लिए हिंसा या अहिंसा के मार्ग का विकल्प होता है। लोकतंत्र में किसी भी रूप से सामाजिक हिंसा का सर्मथन उचित नही लोकतंत्र मे हमारे पास हिंसा या अहिंसा विकल्प के रूप में मौजुद नही होते। 2. यदि भारत किसी लोकतांत्रिक देश का गुलाम न होकर किसी साम्यवादी देश का गुलाम होता तो गाधी की अहिंसा सफल नहीं होती। ऐसे अवसर पर तो हिंसा का ही मार्ग एकमात्र होता है। 3. भारत को स्वतंत्रता क्रांतिकारियों के मार्ग से मिली या अहिसंक मार्ग से, यह बहस आनवश्यक है। स्वतंत्रता के बाद समाज में एक ही मार्ग है और वह है अहिंसा का। 4. सुभाष बाबू का भारत की स्वतत्रता के लिये हिंसक या अहिंसक मार्ग में से एक चुनने का विकल्प था किन्तु हिटलर जैसे तानाशाहों से हाथ मिलाना उचित नहीं था। सुभाष बाबू का यह कहना तो और भी गलत था कि स्वतंत्रता के बाद भी दस बीस वर्षो तक भारत में तानाशाही होनी चाहिए।

116 सत्य, असत्य और भ्रम –

1160. सत्य और असत्य का उपयोग अपनी योग्यता और आवश्यकता के आधार पर करना चाहिए, किसी सिद्धान्त के आधार पर नहीं। किसी कसाई की गाय भाग गई और वह आपसे पूछता है, आप मार्गदर्शक हैं तो न झूठ बोल सकते हैं, न सच बता सकते हैं, न बल प्रयोग कर सकते हैं। आप सिर्फ उसका हृदय परिवर्तन मात्र कर सकते हैं। इसी तरह रक्षक केवल शक्ति के भय का उपयोग कर सकता है। पालक झूठ बोलकर उसे विपरीत दिशा में भेज सकता है और सेवक नहीं देखने का झूठ बोलकर बच सकता है।

1161. यदि पूरी ताकत से प्रचार किया जाय तो भारत में असत्य का सत्य और सत्य को असत्य सिद्ध करना कोई कठिन काम नहीं। सत्य को असत्य असत्य को सत्य सिद्ध करने

में सहायता करने के लिये आपको बड़ी मात्रा में ऐस पेशेवर लोग भी मिल जायेंगे जो आपसे कुछ धन लेकर अपकी बात को पूरी तरह प्रमाणित करने के लिये तैयार है। अन्य कोई ऐसो इकाई नहीं है जो या तो समाज में विश्वसनीय हो या ऐसे मामलो में सत्य के स्थापित करने के लिये मैदान में कूद पड़े। सत्य असत्य के बीच निर्णय करने में प्रचार बहुत बड़ी बाधा हो गया है। लोग समझ ही नहीं पा रहे कि किस पर विश्वास करें।

1162. सत्य असत्य का निर्णय मस्तिष्क का विषय है, हृदय का नहीं। मस्तिष्क तर्क के आधार पर निर्णय करता है। हृदय उस निष्कर्ष के आधार पर आगे बढ़ता है।

1163. भारत में जान बूझकर यह असत्य फैलाया जा रहा है कि तर्क निष्कर्ष निकालने में बाधक है। मैं इस असत्य को चुनौती देता हूं। मैं इस बात से संतुष्ट हूं कि मैंने कुछ सीमित मान्यताओं को विश्व स्तर पर चुनौती दी है। आज तक दुनिया के विद्वानों ने जिनमें भारत और अमेरिका भी शामिल हैं उन्होंने संविधान, मूल अधिकार या अपराध जैसे शब्दों को परिभाषित नहीं किया है। दुनिया या तो मेरी व्याख्या को ठीक कहेगो या गलत। यदि मेरे जीवनकाल में ठीक और गलत का फैसला नहीं हुआ तब मेरे बाद भी बहस तो समाप्त नहीं होनी है। मैं अपने भारत की उस पुरानी अस्मिता का वाहक बनना चाहता हूं जो विश्व को विचार देता था। मुझे अपने विचार को न धरातल पर प्रयोग करने की क्षमता है न ईच्छा। क्योंकि चिंतन मैं कर रहा हूं और उसे व्यावहारिकता की कसौटी पर आप कसेंगे।

1164. उस व्यक्ति के द्वारा सत्य नहीं पाया जा सकता जिसमें प्रचुर मात्रा में विनम्रता न हो। यदि आप सत्य के समुन्द्र के बीच तैरना चाहते है तो आपको अपने आपको शून्य तक ले जाना होगा। विनम्रता और सत्य एक साथ बहुत कठिन है किंतु आवश्यक है।

1165. समाज में जब सच बोलने वालों का अभाव हो जावे तो सत्य खोजने में भी बहुत कठिनाई होती हैं वहीं कठिनाई मेरे सामने भी हैं। वर्तमान समय में दुनिया में सत्य बोलने वालों की संख्या लगातार घटती जा रही हैं भारत में तो लगभग नगण्य तक चली गयी है।

1166. कोई भी बात कभी अंतिम रुप से सत्य नहीं कही जा सकती, चाहे वह किसी के द्वारा भी कही जाये, कभी भी कही जाये। सत्य तो हमेशा वर्तमान के साथ जुड़ा होता है तथा अपनी अपनी क्षमतानुसार वर्तमान में निकाला गया निष्कर्ष होता है। इसके पूर्व की कही बातें मार्गदर्शक होती है, सत्य शोधन में सहायक होती है, सत्य भी हो सकती है, किन्तु अंतिम सत्य नहीं। पूर्व में कही गयी किसी बात को अन्तिम सत्य कहना उचित नहीं है। किसी भी यथार्थ को अंतिम सत्य कभी नही मानना और कहना चाहिये। प्रकृति म अंतिम सत्य होता ही नही। किसी विचार को अंतिम सत्य कहकर प्रचारित करने वाले बुरी नीयत के लोग होते है।

130 विचार मंथन और आधुनिक दुनिया

1330. यदि हम पूरे विश्व का आकलन करें तो पूरे विश्व की हालत भारत जैसी तो नही है किन्तु पूरे विश्व मे भी कुछ अंशो में भारत जैसी हालत बन रही है। पूरी दुनिया मे

भौतिक उन्नति हो रही है किन्तु सुरक्षा और न्याय कमजोर हो रहे है। आम लोगो का चरित्र गिर रहा है, आतंकवाद बढ़ रहा है, सामाजिक व्यक्तियों का मनोबल टूट रहा है और समाज विरोधियों का बढ़ रहा है। राज्य व्यवस्था असफल होती जा रही है।

1331. पूरे विश्व मे तेजी से विचार मंथन का स्थान विचार प्रचार ने ग्रहण कर लिया है। पिछले दो तीन हजार सालों से यह बीमारी शुरू हुई और अब तो इसने महामारी का रूप धारण कर लिया है। मृत महापुरूषो के विचार बिना स्वय मंथन किये ही यथावत समाज तक पहुचाने की धातक परंपरा निंरतर फल फूल रही है।

1332. आधुनिक भारतीय महापुरूषो के रूप मे स्वामी दयानन्द, महात्मा गांधी या श्री राम शर्मा ने अपना सम्पूर्ण निष्कर्ष विचार मंथन प्रकिया से ही निकाला था लेकिन उन्हीं के शिष्यों ने विचार मंथन की प्रकिया को त्याग कर सिर्फ विचार प्रचार को ही अपना उद्देश्य बना लिया है। लोग यह नही सोचते कि निष्कर्ष निकालने और उन्हें क्रियान्वित करने में देश काल परिस्थिति की भी भूमिका हुआ करती है। यदि वे महापुरूष जीवित रहते तो देश काल परिस्थिति अनुसार अपने निष्कर्षों की समीक्षा भी करते और संशोधन भी, किन्तु उनके जाते ही हम विचार मंथन को रोककर सिर्फ प्रचार मे लग गए हैं।

1334. राजनेताओं ने जन कल्याण के नाम पर नागरिक के अधिकतम धन और अधिकारों को अपने पास समेट लिया है। दूसरी ओर धार्मिक गुरूओं ने भी ट्रष्ट या ईश्वर के नाम पर अपनी आर्थिक शक्ति बहुत मजबूत कर ली है। संचालक और संचालित के बीच एक संबंध और बन रहा है कि हर संचालक संचालित को ज्ञान न देकर या तो सुविधाएँ दे रहा है या शिक्षा।

131 विचारक

1310. पिछले कई सौ वर्षों से भारत में विचार मंथन का स्तर लगातार नीचे जा रहा है। वतमान समय में गॉधी के बाद कोई गंभीर विचारक स्थापित नहीं हो पाया। नए स्वतंत्र और गंभीर विचारक निकल नही पा रहे हैं। यदि अपवाद स्वरुप कोई निकलता भी है तो उसका स्तर पिछले विचारकों की तुलना में बहुत कमजोर होता है क्योंकि न तो ऐसे विचारकों को साहित्य का कोई सहारा मिल पाता है, न ही समाज का। ज्यों ही किसी बालक में स्वतंत्र चिन्तन की प्रतिभा दिखती है त्यों ही स्थापित संगठन उनका ब्रेनवाश करके अपने साथ जोड़ने का भरपूर प्रयत्न करने लगते हैं।

1311. विचार मंथन तथा सक्रियता ये दोनों भिन्न–भिन्न होते हैं। अपवाद स्वरूप ही किसी में विचार मंथन का गुण होता है और सक्रियता भी, किन्तु सामान्यतया ऐसा नही होता। विचारक कभी एक नहीं होते, यह स्वाभाविक है। किसी बिंदु पर कोई विचारक एक तरह का निष्कर्ष निकालता है तो दूसरा बिल्कुल विपरीत। यदि विचारकों को एक करने का प्रयास होगा तो वह एक संगठन बन जाएगा और संगठन स्वतंत्र विचारों में बाधक होता है। यही कारण है कि किसी भी संगठन में स्वतंत्र विचारों का अभाव है जिसके परिणाम स्वरूप वर्तमान में समस्याएं तथा टकराव जैसी बातें पैदा हो रही है। संगठन में क्रियात्मक एकरूपता तो होती है, किन्तु देश, काल, परिस्थिति अनुसार संशोधन या सुधार नहीं होते।

1312. स्वतंत्र विचारकों को स्वतंत्रता पूर्वक विचार–मंथन करने का अवसर दीजिए, निष्कर्षों पर अमल करने का कार्य विचारक का नहीं, समाज का होता है। यह करने वालों का समाज में अभाव नही है। अभाव है तो स्वतंत्र विचार मंथन का।

1313. दार्शनिक और विचारक तत्कालीन परिस्थितियों मे दीर्घकालिक समाधान खोजने का प्रयास करते है। जो भी व्यक्ति काल्पनिक कहानी को सत्य के समान स्थापित करे वह विचारक नहीं हो सकता। जो भी व्यक्ति श्रोताओं को जनहित की जगह जनप्रिय भाषा का उपयोग करके मोहित कर ले वह विचारक नहीं हो सकता।

1314. दो विचार कभी एक नहीं होते और दो विचारकों के विचार भी पूरी तरह एक होना संभव नही है। विचारक विरले ही होते है, कभी–कभी ही सफल होते है और करोड़ो की आबादी मे एकाध होते है।

1315. किसी विचारक की अपनी सीमाएं भी होती है तथा स्वतंत्रताएं भी। किसी विचारक को कभी किसी संगठन का न तो सदस्य होना चाहिये न बनाना चाहिये। किसी संस्था के साथ जुड़ सकते है क्योंकि संगठन का एक अनुशासन होता है जो विचारक की स्वतंत्रता मे बाधक होता है।

1316. विचारक की भ्मिका उस प्रकार से सतर्क रहनी चाहिये जैसे नदी में डूबते हुए को निकालने वाले की सतर्कता। यदि बचाने वाला सतर्क नहीं रहा तो दोनों का डूबना निश्चित है।

1317. विचारक के विचार समाज ही कार्य रूप में परिणत करता है।

1318. भारतीय मान्यता के अनुसार जो व्यक्ति जितना गंभीर विचारक होता है वह उतना ही बड़ा नास्तिक होता है। विचारक पूजा पाठ अथवा भक्ति और उपासना की अपेक्षा चिंतन पर अधिक जोर देते है।

1319. विचारक वह होता है जो किसी विषय पर उस समय प्रचलित धारणाओं पर चिन्तन करके कुछ निष्कर्ष निकालता है। विचारक के निष्कर्ष देश काल परिस्थिति पर आधारित होते हैं तथा देश काल परिस्थिति बदलते ही निष्कर्ष बदल भी सकते हैं।

1320. सामाजिक निष्कर्ष निकालने के मामलों में विचारकों की भूमिका या तो शून्यवत हो गई है अथवा नगण्य। विचारकों का अभाव समाज के समक्ष एक खतरनाक संकट है। सच्चाई यह है कि समाज तो भावना प्रधान होता है, वह तो अनुकरण जानता है। विचारकों के अभाव में समाज इन नकली विचारकों या राजनेताओं के निष्कर्षों को ही सच मानकर उसका अनुकरण करने लग जाता है।

1321. मैं एक विचारक हूं। मेरा विचार आंख मूंदकर मानिये यह मेरा कथन नहीं क्योंकि इन विचारों में से कितने व्यावहारिक हैं और कितने नही यह आप सबके प्रयोग के द्वारा ही पता चलेगा। मेरा यह भी कथन है कि आप निर्णय करने के पूर्व मेरी भी बात सुनिये। बिना ठीक से विचार किये हवा में बह जाना ठीक नहीं।

1322. प्रायः प्रत्येक विचारक चिन्तन करता है, समीक्षा करता है, संशोधन करता है और यदि आवश्यक हो तो अपने पूर्व विचारों को तर्कसंगत तरीके से बदल भी देता है, किन्तु बाद के लोग उक्त महापुरुष के विभिन्न परिस्थितियों तथा विभिन्न संदर्भो को बिना विचारे ही ऐसे भिन्न–भिन्न विचारों को उद्धृत करके महापुरुष के चिन्तन को ही विवादास्पद बना देते है।

134 साहित्य की दिशा

1340. साहित्य समाज का दर्पण होता है। यदि साहित्य में कोई विकृति दिख रही है, तो वह समाज की विकृति है, साहित्य की नहीं साहित्य ही समाज का स्वरूप निर्माण करता है। साहित्य वह कारीगर है जा मूर्ति को निरंतर काट–छांट कर उसे समझने योग्य स्वरूप देने में लगा रहता है।

1341. साहित्य और विचार एक दूसरे के पूरक होते है। एक के अभाव में दूसरे की शक्ति का प्रभाव नहीं होता। विचार– तत्व होता है, मंथन का परिणाम होता है, मस्तिष्क ग्राह्य होता हैं. साहित्य– विचारक के निष्कर्षो को आधार बनाता है, मंथन का अभाव होता है, हृदय ग्राह्य होता है, कला प्रधान होता है। विचार घी है तो साहित्य मट्ठा, विचार लंगड़ा है और साहित्य अंधा। बिना साहित्य के विचार की स्थिति एक वस्त्रहीन नारी के समान है और बिना साहित्य के विचार की स्थिति वस्त्रालंकृत मिट्टी की मूर्ति।

1342. विचार कठिनाई से ग्रहण हो पाता है तो साहित्य आसानी से। विचार मस्तिष्क को प्रभावित करता है तो साहित्य हृदय को। विचार तर्क प्रधान होता है तो साहित्य कला प्रधान। विचारों का प्रभाव बहुत देर से शुरू होता है और देर तक रहता है तो साहित्य का प्रभाव तत्काल होता है और अल्पकालिक होता है।

1343. साहित्य विचारों की कब्र होता है। साहित्य विचारों को कब्र मे पहुंचाकर लम्बे समय तक के लिये सुरक्षित रखता है दूसरी ओर साहित्य विचारों को देश काल परिस्थिति के आधार पर होने वाले नये–नये सशोधनों से भी दूर कर देता है। विचार व्यक्ति के ज्ञान का विस्तार करता है तो साहित्य भावना का। दोनों का प्रभाव समाज पर अलग–अलग होता है।

1344. विचारक चाहे जितना गंभीर निष्कर्ष निकाल ले किन्तु जब तक उसे साहित्य का सहारा नहीं मिलता तब तक वह आगे नही बढ़ पाता। या तो वह वहीं पड़ा–पड़ा सड़ जाता है या साहित्य से संयोग की प्रतीक्षा करता रहता है। इसी तरह साहित्य को जब तक विचार न मिले तब तक वह निष्प्राण निष्प्रभावी प्रदर्शन मात्र करता रहता है। विचार विहीन साहित्य एक मृत शरीर है जो आत्मा के अभाव में समाज के लिये घातक प्रभाव डालना शुरू कर देता है। ऐसा साहित्य विचारों के अभाव में प्रचार से प्रभावित हो जाता है तथा असत्य को ही समाज में सत्य के समान स्थापित कर देता है।

1345. कथाकार भी विचारक न होकर साहित्यकार की ही श्रेणी में होते है क्योंकि कथाकार आम तौर पर कला का उपयोग करते हैं। जो भी व्यक्ति काल्पनिक कहानी को सत्य के

समान स्थापित करें वह विचारक नहीं हो सकता। जो भी व्यक्ति श्रोताओं को जनहित की जगह जनप्रिय भाषा का उपयोग करके मोहित कर ले, वह विचारक नहीं हो सकता।

1346. भले ही साहित्य अपनी स्वतंत्रता खो दे किन्तु विचार अपनी स्वतंत्रता के लिये संघर्ष करता रहेगा क्योंकि यदि विचार अपनी स्वतंत्रता को बचाने में सफल रहा तो साहित्य उसका साथ दे सकता है और तब स्वतंत्र साहित्य तथा स्वतंत्र विचार मिलकर समाज के बीच बढ़ते अंधेरे को घटाने में सहायक हो सकते है।

1347. विचार की स्थापना के लिए साहित्य अनिवार्य है और साहित्य के मार्गदर्शन के लिए विचार। विचार को यदि साहित्य का सम्बल न मिले तो विचार अंकुरित नहीं हो पायेगा और साहित्य को विचार की दिशा न मिले तो वह झाड़ झंखाड़ के रूप में अनावश्यक विस्तार कर लेगा।

135 साहित्य की दशा

1350. विचारकों द्वारा गंभीर विचार मंथन के बाद निकाले हुये निष्कर्ष को समाज तक पहूंचाने का दायित्व साहित्यकार का होता है। आदर्श स्थिति वह होती है जब विचारक और साहित्यकार दोनो ही स्वतंत्र हों। वर्तमान में विचारकों का अभाव हो गया है इसलिए मंथन प्रक्रिया मृतप्राय है और निष्कर्ष नहीं निकल रहे है। राजनेता ही विचारक बन बैठे है। राजनेता जो निष्कर्ष निकालते है, वही साहित्यकार के लिये विचार बन जाता है।

1351. प्रतिबद्ध साहित्कारों में कई लोग मूल रूप से साहित्यकार नहीं होते बल्कि संस्थाएं ऐसे लोगों की पहचान करके उन्हें दीक्षित करती है और धीरे धीरे साहित्य के क्षेत्र में स्थापित कर देती है। ये लोग साहित्य के लिए विचारों का चयन नहीं कर पाते बल्कि साहित्य की विधा का अपने लिए उपयोग करते है। ये वामपंथी साहित्यकार धीरे–धीरे साहित्य पर इस तरह छा गये कि स्वतंत्र साहित्य तो दिखना ही बंद हो गया और धीरे–धीरे दक्षिणपंथी साहित्कारों ने भी वही मार्ग चुना है। अब संस्कृति और राष्ट्रीयता शब्द इनके गुलाम बन के रह गए है।

1352. साहित्य समाज में विचारों का संवाहक बने रहे किन्तु वह किसी पेशेवर दुकान का ट्रेड मार्क बनने से बचे अन्यथा साहित्य भी उसी तरह दलदल में फंस जायेगी जिस तरह धर्मनिरपेक्षता या भारतीय संस्कृति फंसी हुई है।

1353. दिल्ली में किसी रात किसी बड़ी दावत मे चले जायें जहॉ मार्क्सवादी पार्टी से लेकर कांग्रेस भाजपा के राजनेता पत्रकार बुद्धिजीवी बड़े व्यापारी बड़े कलाकार बड़े अफसरान आदि वे लोग आते है जो दिल्ली की सरकार प्रत्यक्ष या परोक्षरूप से चलाते है। शराब के साथ साथ ये सारे कारनामें आपको सुनने को मिल जाएंगे।

1354. कितनी बचकानी बात है कि राजनेताओं ने दहेज, आबादी वृद्धि, महिला अत्याचार, कन्या भ्रूण हत्या, मंहगाई जैसे अस्तित्वहीन, अप्राथमिक अथवा अल्प प्राथमिक मुद्दों को सर्वोच्च प्राथमिक बता दिया और साहित्यकारों, कलाकारों ने पूरी ईमानदारी से इन मुद्दों को समाज के सामने सर्वोच्च प्राथमिकता के रूप में स्थापित कर दिया। आज देश के

किसी अच्छे से अच्छे स्थापित विचारक की भी हिम्मत नहीं है कि वह इन विषयों पर अपने अलग विचार रख सकें।

1355. विचार तो पूरी तरह स्वतंत्र होता है। न तो विचार कभी प्रतिबद्ध हो सकता है न होता है। वैसे तो साहित्यकार भी नैतिक रूप में स्वतंत्र ही होते है और यदि कोई कवि या लेखक, विचार–प्रतिबद्ध न होकर सत्ता–प्रतिबद्ध हो जाता है तो वह चारण या भाट तो कहा जा सकता है किन्तु साहित्यकार नहीं।

1356. प्रतिबद्धता की बीमारी वामपंथ से शुरू हुई। वामपंथियों ने अपनी आवश्यकतानुसार लेखक, साहित्यकार, कवि, नाटककार तैयार किये, उन्हें बढ़ाया, स्थापित किया तथा उपयोग किया। प्रगतिशील लेखक संघ आदि के नाम से ऐसे ही प्रतिबद्ध संगठन खड़े किये गये जो हमेशा–हमेशा के लिये गुलाम होते हुए भी स्वयं को स्वतंत्र कहते रहे। इन सबके संगठन बने जो एक दूसरे के साथ जुड़कर काम करते रहे। अब दक्षिणपंथ भी रामपंथियों के मार्ग पर चल कर वामपंथ साहित्य को चुनौती दे रहा है।

1357. यदि साहित्य प्रतिबद्ध गुलाम या भयभीत हुआ तो आंशिक क्षति है, यदि राजनीति हुई तो कुछ विशेष क्षति है, यदि समाज सेवा हुई तो अपूर्णीय क्षति है किन्तु यदि विचार ही प्रतिबद्ध, गुलाम, व्यावसायिक या भयग्रस्त हुआ तो शेष बचा ही क्या?

भावी भारत का संविधान सहयोग राशि ₹50	वर्तमान संविधान की खामियों एवं उसके निराकरण का सुंदर विश्लेषण करती, देशभर के तमाम विद्वानों एवं बुद्धिजीवियों के साथ निरंतर 20 वर्षों तक शोध के उपरांत लिखी इस पुस्तक की लोकप्रियता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि अब तक तीन बार इसे अलग–अलग संस्थानों के द्वारा छपवाया जा चुका है।
मुनि मंथन निष्कर्ष सहयोग राशि ₹50	श्रद्धेय मुनि जी के 70 वर्षों तक देशभर के मूर्धन्य विद्वानों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं के साथ निरंतर 'विचार मंथन' के निष्कर्षों को सूत्र रूप में समेटे, इस पुस्तक को तैयार होने के बाद भी 4 वर्षों तक इसमें संकलित सिद्धांतों पर देशव्यापी विमर्श के उपरांत यह पुस्तक आपके सामने आ पाई है।
मौलिक व्यवस्था का विचार सहयोग राशि ₹50	यह पुस्तक 'व्यवस्था' पर तमाम वैश्विक संदर्भों के आधार पर गहन विश्लेषण प्रस्तुत करती है। समाज के प्रत्येक इकाई के स्वतंत्रता सुरक्षा के साथ पोषण की गारंटी पर एक रिसर्च मॉडल के रूप में है यह पुस्तक है।
बस अब बहुत हो चुका सहयोग राशि ₹50	व्यवस्था की खामियों एवं उसके समाधान के लिए आवश्यक प्रभावी विचार एवं उद्दीपक ऊर्जा को अपने में समेटे इस पुस्तक को लिखा है अशोक गाडिया जी ने। यह पुस्तक 'व्यवस्था परिवर्तन' के वैचारिक पृष्ठभूमि को तैयार करती है।
मुनि मंथन सहयोग राशि ₹10	श्रद्धेय मुनि जी के विचारों को गागर में सागर सा अपने में समेटे सीधे सरल समझ में आने वाली शैली में लिखी यह पुस्तक, एक रंगकर्मी निर्देशक निर्माता एवं लेखक आनंद गुप्ता जी की रचना है। शराफत से समझदारी की ओर जाने वाले मार्ग का पथ प्रदर्शक के रूप में या पुस्तक पठनीय है।
रामानुजगंज एक आवाज सहयोग राशि ₹10	अपने में श्रद्धेय बजरंग मुनि जी के जीवन की झलक समेटे इस पुस्तक को श्री नरेंद्र जी ने नाटक की शैली में लिखा है। सामाजिक समस्याओं एवं उसके निराकरण पर पात्रों के माध्यम से यथार्थ को नए रंग रोगन में प्रस्तुत करती है यह पुस्तक।
एक ही रास्ता सहयोग राशि ₹10	नुक्कड़ नाटक गीत संगीत जैसे सांस्कृतिक विधाओं से लोगों को समझदार बनने की प्रेरणा देने के लिए मुनि जी ने अपनी युवावस्था से ही प्रयास शुरू कर दिए थे। उन तमाम गीतों एवं दृश्यों को नाटक के रूप में इस पुस्तक में लिपिबद्ध किया गया है।

इन पुस्तकों का एक सेट मंगाने के लिए मात्र ₹100 का आर्थिक सहयोग और अतिरिक्त डाक खर्च देना होगा। इन पुस्तकों को एक साथ मंगाने के लिए सम्पर्क करें–8318621282, 7869250001, 9617079344

हमारी संस्थाएँ

■ मार्गदर्शक समाजिक शोध संस्थान ■ ज्ञानयज्ञ परिवार

संस्थान के कार्य ■ समाज विज्ञान पर विश्वव्यापी रिसर्च तथा निष्कर्ष निकालना।

परिवार का कार्य

■ देश भर में ज्ञान केन्द्रो का इस तरह विस्तार हो कि वहाँ स्वतंत्र विचार मंथन हो तथा संवाद प्रणाली विकसित हो।

कार्यक्रम

■ ज्ञान चर्चा –प्रतिदिन शाम साढ़े आठ से साढ़े नौ बजे तक किसी एक पूर्व घोषित विषय पर स्वतंत्र वेबिनार।

■ महायज्ञ – वर्ष में एक बार या दो बार बड़े सामुहिक यज्ञ का आयोजन।

■ मार्गदर्शक मंडल – ऐसे न्यूनतम पाँच सौ लोगों की टीम तैयार करना जो समाज विज्ञान पर रिसर्च करने की क्षमता रखते हैं।

■ ज्ञान कुंभः– वर्ष मे दो बार पंद्रह–पंद्रह दिनो के ज्ञान कुंभ जिसमें मार्गदर्शक मंडल के लोग स्वतंत्र विचार द्वारा प्रतिदिन दो–दो विषयों पर निष्कर्ष निकाल कर समाज को दें।

माध्यम

- ज्ञान तत्व पाक्षिक पत्रिका
- यू टयूब चैनल
- फेसबुक एप से प्रसारण
- इंस्टाग्राम
- वॉट्सऐप ग्रुप से प्रसारण
- टेलीग्राम
- जूम एप पर वेबिनार
- कू एप

ज्ञानतत्व पाक्षिक पत्रिका का माह में दो प्रति का प्रकाशन सुचारू रूप से होना शुरू हो गया है। इसकी सहयोग राशि रू. 100/- वार्षिक अभी तय किया गया है। लेख प्रस्तुती आदि पर सुझाव अवश्य दें।

पंजीकृत पाक्षिक
पंजीकरण क्रमांक–68939 / 98

डाक पंजीयन क्रमांक–छ.ग. / रायगढ़ / 10 / 209–2021

प्रति,

श्री / श्रीमती _____

_____

_____

_____

संदेश

वर्तमान संसदीय लोकतंत्र में तो संसद एक जेल खाना है। जहां हमारा भगवान रूपी संविधान कैद है। भगवान को जेलखाने से मुक्त कराना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। संसदीय लोकतंत्र को सहभागी लोकतंत्र में बदलना ही होगा। लोक संसद के लिये आंदोलन इसका प्रारंभिक चरण है। लोक स्वराज्य मंच ने इसकी पहल की है। लोक स्वराज्य मंच से जुड़िये और अपने भगवान को जेलखाने से मुक्त कराने की पहल कीजिए।

पत्र व्यवहार का पता

पता - बजरंग लाल अग्रवाल पोस्ट बॉक्स 15, रायपुर (छ.ग.) 492021
website : www.margdarshak.info

प्रकाशक, सम्पादक व स्वामी - बजरंगलाल
09617079344
Email : bajrang.muni@gmail.com
Support@margdarsgak.info
Facebook Id : **बजरंग मुनि** (User Name)

मुद्रक- माया प्रेस रामानुजगंज, सरगुजा (छ.ग.)